

Title: The Speaker made Vaedictory reference on the conclusion of the second part of the 15th session of the 15th lok Sabha.

गृह मंत्री (श्री सुशीलकुमार शिंदे): अध्यक्ष महोदया, 15वें सत्र का यह आखिरी दिन है और हमारे शीत सत्र का भी आखिरी दिन है। सभागृह के नेता के नाते से मैं कहना चाहता हूँ, हमेशा सभागृह के प्रधानमंत्री नेता होते हैं, लेकिन राज्य सभा के सदस्य होने के कारण प्रधानमंत्री गये पांच साल से इस सदन के नेता नहीं रहे, तीन अगस्त को मुझे प्रधानमंत्री और श्रीमती सोनिया गांधी जी ने यहां सदन का नेता बनाने का मौका दिया। ... (व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on record.

(Interruptions) अ€/*

श्री सुशीलकुमार शिंदे : सदन का नेता बनाया, मैं इसके लिए उनका आभारी हूँ। एक दलित वर्ग के कार्यकर्ता को इस बड़े सदन का नेता बनाना, देश का सबसे बड़ा हमारा यह पूजा सत्ता का टैम्पल है, हमारा मंदिर है। प्रधानमंत्री जी आ गये। इस पवित्र मंदिर में हम हमारे समाज के, हम हमारी जनता के, जिन्होंने यहां पर हमें पहुंचाया है, उनके दुखों को, उनकी कठिनाइयों को हम यहां रखते हैं और उनको सुविधा देने का प्रयास हमेशा करते हैं। मैं इस सदन में दो बार पहले भी सदस्य रहा हूँ, लेकिन इस बार हमें एक ऐसा सत्र देखने को मिला कि कठिनाइयों में भी, स्पीकर साहिबा, जिस तरह आपने इस सदन को चलाया है, इस सदन की जो गरिमा बढ़ाई है, उसे हम भूल नहीं सकते। इतिहास में इसकी नोंद हो जायेगी। यह आसान बात नहीं थी। यह हमारे लिए भी बहुत गर्व की बात है कि आप भी उसी समाज से आती हो। जिस समाज से मैं आता हूँ। यह बड़े गर्व की बात है कि यहां विरोधी दल की नेता महिला हैं, स्पीकर साहिबा महिला हैं, हम तो ऐसे ही सदन में हैं लेकिन असली नेता हमारे पार्टी की नेता हैं। यह एक त्रिवेणी संगम है। भारत में इस तरह का त्रिवेणी संगम आने हमें देखने को मिलेगा या नहीं, यह पता नहीं है। ... (व्यवधान) लेकिन, इस सदन में बहुत ऐतिहासिक घटनाएं हुई हैं। हम सब उन घटनाओं के साक्षीदार हैं। कई अच्छी बातें हो गईं तो कई एक-दूसरे पर टीका-टीप्पणी हो गई। इस सदन में नेशनल फूड सिक्वोरिटी बिल पास हो गया है। इस देश का जो गरीब आदमी है, इस देश का जो किसान है, एक तरफ किसानों को भी सिक्वोरिटी मिली और फूड सिक्वोरिटी के जरिए गरीब आदमी को रोजाना खाना मिलना तय हो गया।

अध्यक्ष महोदया, हम सब से ज्यादा सोशल चेंज की बातें करते हैं। मैनुअल स्कैवेंजर का बिल इस सदन में पास हो गया। मैं समझता हूँ कि बहुत सालों के बाद इतना कठिन बिल, इतनी कठिन समस्याओं को पार करने में हम सफल हो गए। लैंड एक्वीजिशन रिहैबिलिटेशन बिल एक माइलेज का टप्पा था। लोकपाल और लोकायुक्त का बिल और स्ट्रीट वेण्डर बिल, बहुत अच्छे काम इस सभागृह में हो गए हैं। सबसे बढ़िया हुआ है कि किमिनल लॉ अमेंडमेंट बिल महिलाओं को सिक्वोरिटी देने के लिए पास हो गया है। एक बहुत ही संवेदनापूर्ण घटना दिसम्बर में घट गई। पूरा सदन दिख पड़ा कि हम सब एक हैं। ऐसे वक्त में हम सभी मतभेद छोड़ कर इकट्ठा हो गए और एक कमेटी अर्पाइंट की। इस कमेटी के रिपोर्ट में किए गए सभी रिकमेंडेशंस को हमने स्वीकार किया और यूनिनिमसली इसको पास कर दिया। ऐसा बहुत कम ही होता है। मैं ज्यादा वक्त नहीं लेना चाहता हूँ लेकिन बहुत अच्छे काम इस सभागृह में हुए हैं।

अध्यक्ष महोदया, मैं क्या बताऊं कि इस सभागृह को संभालने का काम कितना कठिन था? मुझे तो डर लगता था। हम तो पुरुष वर्ग के हैं। जब कई सदस्य इकट्ठा हो कर आते थे तो मुझे डर लगता था। अभी-अभी की घटना है कि एक बिल पास करते समय ये अंग पर आते थे तो हम सब डर गए थे। ... (व्यवधान) डरना तो पड़ता है। ... (व्यवधान) गृह मंत्री कभी नहीं डरता है। ... (व्यवधान) सत्ता पर बैठा हुआ कोई भी गृह मंत्री होता है तो वह डरता नहीं है, उसमें शालीनता होती है। वह निडर होता है। ... (व्यवधान) हमने निर्णय भी ले लिए। ... (व्यवधान) इस कुर्सी पर बैठ कर वैसे निर्णय भी ले लिए, जो निर्णय इस सभागृह में कई सालों से नहीं लिए गए थे। ... (व्यवधान) यह कोई कम बात नहीं है।

अध्यक्ष महोदया, मैं प्रतिपक्ष की नेता सुषमा जी का बहुत आभारी हूँ। वह कभी-कभी गुरसा करती हैं तो ऐसा लगता है कि वह हमसे नाराज हैं। वह हमसे बात ही नहीं करेगी। जैसे ही वह हाउस के बाहर चली जाती हैं तो उनके बात में जो मिठास है, वह कोई मिठाई खाने से भी नहीं मिलती है। ... (व्यवधान) हाउस के बाहर तो यह होना ही चाहिए। ... (व्यवधान) हाउस में तो वह अपना काम करेगी और हम अपना काम करेंगे। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, यह कहना जरूरी है कि बहुत बार हम इतने तंग परिस्थितियों में काम करते हैं, जब हम अच्छी बात करना चाहते हैं, अच्छी घटनाएं इस देश को देना चाहते हैं, कुछ सुविधा देना चाहते हैं। कल का तेलंगाना का ही बिल ले लीजिए। हमें खुशी है, लगता था कि विरोधी दल के लोग विशेषतः बीजेपी हमें सपोर्ट नहीं करेगी, लेकिन इन्होंने इसमें प्रैस्टिज नहीं रखी कि सोनिया गांधी जी ने पांच साल, दस साल पहले जो प्रॉमिस किया था, उसे पूरा करना है या नहीं। उन्होंने कहा कि हमने भी प्रॉमिस किया था। हमने भी प्रॉमिस किया था बोलकर जिस तरह इस बिल को आपने पास किया, इसके लिए मैं आपको भी धन्यवाद देना चाहूंगा। ... (व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): उसमें हम लोग भी रहे। ... (व्यवधान)

श्री सुशीलकुमार शिंदे : मैं आप पर भी आ रहा हूँ। अभी मैं सामने बात कर रहा हूँ, यहां मुझे आना है। ... (व्यवधान) समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह जी, बहुजन समाज पार्टी के नेता, शरद यादव जी, बालू जी, कम्युनिस्ट पार्टी के बसुदेव आचार्य जी नहीं दिख रहे हैं लेकिन दासगुप्ता जी यहां बैठे हुए हैं, बीजू पटनायक जी के सदस्य, दारा सिंह जी, तृणमूल कांग्रेस के सदस्य दिख रहे हैं। मैं सबको धन्यवाद देता हूँ। प्रजातंत्र में विरोधी दल के बिना कुछ नहीं होता। केवल सत्ताधारी पक्ष में रहकर सरकार नहीं चला सकते, कोई काम नहीं कर सकते, विरोधी दल होने चाहिए, लेकिन होने ऐसे चाहिए कि कंस्ट्रक्टिव काम में हमेशा मदद करें। मुझे इस बात की खुशी है कि पन्द्रहवीं लोक सभा में बहुत कंस्ट्रक्टिव काम और चीजें हुई हैं। मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ। मेरा डेढ़ साल का छोटा सा काल था। मुलायम सिंह जी भी कभी-कभी बहुत गरम होते थे, लेकिन बेसिकली वे टीचर हैं। कितने लोगों को पता है मालूम नहीं, लेकिन जैसे वे गरम होते थे वैसे ही ठंडे भी हो जाते थे। वे अपने विद्यार्थियों को जिस तरह समझाते थे, उस तरह विचार करके समझाते थे। ... (व्यवधान) आचार्य जी आ गए हैं। मैं आचार्य जी को बहुत सालों से देख रहा हूँ। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया जी, मुझे पता नहीं है कि हम में से कितने लोग सोलहवीं पार्लियामेंट में आ सकेंगे। ... (व्यवधान) जरा थोड़ा सा सब्र कीजिए। पन्द्रहवीं पार्लियामेंट में जितना समय बैठने को मिला है, बैठिए। हमारे कई साथी बीच में चले गए, लेकिन कई साथी सोलहवीं लोक सभा में मिलेंगे कि नहीं, पता नहीं। लेकिन मैं इस समय

सदन की नेता की ओर से आप सबको शुभकामनाएं देता हूँ। आपने जिस तरह का बर्ताव रखा, जिस तरह की संवेदना रखी, जिस तरह का प्यार रखा, मतभेद होते रहते हैं, टीका-टिप्पणी भी होती रही है, लेकिन किसी के घर का काम नहीं है, यह देश का काम है और देश का काम करने के लिए थोड़ी इधर-उधर की बातें भी होती हैं तो दूसरे ही मिनट हम उन्हें भूल जाते हैं और समाज के लिए हमेशा फायर ब्रिगेड की गाड़ी जैसे तैयार रहते हैं, जहां भी आग लगे उसे बुझाने का प्रयास करते हैं।

आज पन्द्रहवीं लोक सभा का आखिरी सत्र है। अध्यक्ष महोदया जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। आपने मुझे बहुत बार बड़े-बड़े मौके दिए और मैंने बात की। मैं नया था। मैं पीछे बैठने वाला आदमी था लेकिन प्रधानमंत्री जी और सोनिया जी ने मुझे सभागृह के नेता के तौर पर आगे बिठाया। पहले दिन मुझे प्रधानमंत्री जी के बगल में बैठने में डर लगा। हमने ऐसा कभी नहीं देखा। लेकिन हमारे नेता ने मुझे यहां बैठने का मौका दिया जिसकी वजह से मैं विरोधी दल के सभी सदस्यों के सहयोग से थोड़ा काम कर पाया। मैं आपको भी शुभकामनाएं देता हूँ। भगवान आपको लम्बी उम्र दे और देश में अच्छा काम करने के लिए इस सदन में दुबारा आने के लिए प्रार्थना करता हूँ।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): अध्यक्ष महोदया, जिन विषम परिस्थितियों में आपने धैर्य के साथ सदन चलाने का काम किया, उसके लिए हम हम आपको बधाई भी देते हैं और धन्यवाद भी देते हैं। मुझे खुशी है कि सारे सदन का विश्वास आप पर पूरी तरह से था, चाहे आपस में कितने भी मतभेद रहे हों।

जहां तक सरकार और विपक्ष का सवाल है, तो उनकी अपनी-अपनी जिम्मेदारी है। हमारी विपक्ष की जिम्मेदारी है कि सरकार गलत काम न करने पाये। अगर कहीं ऐसे काम हो रहे हैं, तो उनका विरोध करके सरकार की जानकारी में लाने का काम करते हैं। अगर आलोचना भी करते हैं या गुरसा भी आ जाता है, तो वह गुरसा अपने हितों के लिए नहीं है। क्योंकि हमें जनता दिखाई देती है और जनता का यह सदन है। उस जनता के लिए हम क्या कर सकते हैं और जनता को क्या-क्या आश्वासन दिये हैं, उन आश्वासनों के बावजूद भी जब कभी दुविधा होती है, या काम नहीं होते, तो हम लोगों को गुरसा आना स्वाभाविक है। हमें जनता को भी देखना है। हम कहां तक उनके सवालों, समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार से आग्रह करते हैं।

अध्यक्ष महोदया, यह सही है, क्योंकि हम भी इसी तरह से विधान सभा में रह चुके हैं। कुछ भी हो, थोड़ी बहुत सरकार तानाशाही तो होती है। यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सरकार मनमानी करती है। लेकिन उस मनमानी को रोकने के लिए अगर हम कुछ विपक्ष के लोग असहमति व्यक्त करें, तो कोई नाराजगी नहीं होनी चाहिए। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर जितने भी यहां माननीय सदस्य हैं, चाहे इधर के हों, उधर के हों या पीछे बैठे हों, उनके लिए हमारी तरफ से शुभकामनाएं हैं। हमारी कामना है कि सभी स्वस्थ रहें, सुखी रहें और आने वाले सदन में फिर से आ जायें... (व्यवधान) हमें बहुत अच्छा लगेगा, क्योंकि सबके साथ बहुत परिचय हो चुका है। आप में से जब कोई नहीं आ पायेगा, तो कभी-कभी उनकी याद आयेगी। इसलिए हम चाहते हैं कि आज सब मतभेद भुलाकर, कटुता छोड़कर प्यार-मोहब्बत, दोस्ती के साथ यहां से जायें। अगर किसी को यहां कोई परेशानी हुई हो, तो उन सबको भूलकर यहां से जायें।

मैं पुनः आप सबको धन्यवाद देता हूँ। इधर भी धन्यवाद देते हैं और नेता विरोधी को भी धन्यवाद देते हैं। प्रधान मंत्री जी को, नेता सदन को विशेषकर सोनिया जी को धन्यवाद देते हैं। उनकी राय से आप सब चले रहे हैं, इसलिए उनकी विशेष भूमिका रही है। समय-समय पर अगर हमने भी कोई इशारा किया या पर्ती भेजकर कुछ आग्रह किया, तो उन्होंने उसका पालन किया। इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

अब आडवाणी साहब जैसे वरिष्ठ, मुझे लगता है कि आज सदन में सबसे वरिष्ठ नेता यही हैं। इस सदन में वे सन् 1972 से लगातार नेता रहे हैं। लेकिन हमने यह जरूर कह दिया था कि उम्र में बड़े हैं। मेरा बत 1967 है और आपका 1972 है। हमने आपसे यह जरूर कह दिया था, इसलिए आप इसका बुरा मत मानना। लेकिन आप सीनियर और वरिष्ठ लीडर हैं। जिन परिस्थितियों में आपने इस पार्टी को मजबूत किया। एक ही अफसोस है, बुरा मत मानिए कि आज जब पार्टी मजबूत बनी है, तो उसमें महत्वपूर्ण भूमिका आपकी थी। हमारा आपका कुछ मुद्दों को लेकर झगड़ा था, विवाद था। वे देश के मुद्दे थे, मामूली मुद्दे नहीं थे। लेकिन आपको वहां से यहां बैठा दिया। ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह हम आपका बता रहे हैं। तभी तो आप कमजोर हो रहे हैं। ... (व्यवधान) इसलिए आप कमजोर हो रहे हैं। हम आपके ही संबंध में अच्छाइयां बता रहे हैं कि आपको कमजोर करने से आप कमजोर हो गये। आडवाणी साहब से मेरे मुद्दों को लेकर बहुत मतभेद रहे। हमारा संघर्ष हुआ है। यहां बैठकर भी संघर्ष हुआ। वे मुद्दे यहां नहीं भुलेंगे जब आप मुझसे नाराज हुए थे। चन्द्रशेखर जी प्रधान मंत्री थे। उन्होंने आपको और मुझे बुलाया था कि आप दोनों में जो गंभीर मतभेद हैं, उन्हें कैसे दूर किया जाये। लेकिन मुझे याद रहेगा कि आप बहुत नाराज हो गये थे। श्री चन्द्रशेखर जी ने उसे ठीक किया था। फिर अभी तक हम दोनों ज्यों के त्यों संबंध बनाये हुए हैं। यह है लोकतांत्रिक व्यवस्था। इसलिए हम चाहते हैं, मेरी कामना है, ज्यादा भाषण देने की जरूरत नहीं है। हमारी कामना है कि सभी लोग देश के लिए और देश की जनता के लिए, चाहे देश की सीमा का सवाल हो, चाहे आंतरिक सवाल हो, देश की जनता के लिए हम लोग हैं, उस जनता के लिए हम सब समर्पित रहेंगे। यह संकल्प लेकर जाना है। हम चाहेंगे कि सभी लोग फिर से जीतकर आ जाएं, तब खुशी होगी। स्पीकर साहब तो जीतकर आ ही जाएंगी। मेरी शुभकामना है और सदन की तरफ से भी कामना है कि पहले से भारी बहुमत से जीतकर आएं। जरूरत पड़ी, तो हम अपने उम्मीदवार को भी आपकी तरफ से ही खड़ा करेंगे। हम अभी तक बिहार के साथियों से कह रहे हैं कि हमारी पार्टी आपके खिलाफ चुनाव नहीं लड़ेगी। लोग टिकट मांगने आ रहे हैं, लेकिन हम उम्मीदवार नहीं खड़ा करेंगे। इस अवसर पर सबसे बड़ी उपलब्धि है, मान लीजिए कांग्रेस पार्टी की शुभकामना है या सबकी शुभकामनाएं हैं। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण पद पर आप आसीन हैं। आपने सबको लेकर चलने की कोशिश की। आपने सदन को बहुत अच्छे तरीके से चलावाया। इसलिए आपको विशेष बधाई। इन्हीं शब्दों के साथ प्रधानमंत्री जी, सोनिया जी तथा आपके सभी साथियों को बधाई और सभी विपक्ष में बैठे साथियों को मेरी शुभकामनाएँ, स्वस्थ रहें, पूसन्न रहें और आगे जीतकर आएं।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): अध्यक्ष जी, अभी जो बातें गृह मंत्री जी और मुलायम सिंह जी ने कही, मैं उसे दोहराऊंगा नहीं। मैं उनकी सभी बातों के साथ अपने को शरीक करता हूँ। यह मौका, जिस तरह का वातावरण है, उसमें मैं कोई ऐसी बात नहीं करना चाहता, जिससे इस सदन की आज की जो गरिमा है, वह टूट जाए। निश्चित तौर पर मैं आपके माध्यम से एक निवेदन करूंगा कि जो देश है, वह कई तरह से हमारे सबके, इस सदन के आवरण से लोगों के मन में दुख है। कई लोग तो सदन को समझते ही नहीं हैं। जो समझ में आता है, वह बहुत ही दुखदायी है। यहाँ हम सभी मेम्बर लोग बैठे रहे, कहा जाता है, गृह मंत्री जी कह रहे थे कि आंग पर आंग आ रहे थे, तो उसमें सिर्फ एक सूबे के ही लोग थे। एक बात जरूर है कि उन विकट परिस्थितियों में आपने जो संतुलन दिखाया, वह अध्यक्ष की गरिमा के अनुरूप था। मैं आपके माध्यम से एक और निवेदन करूँ कि देश तो न्याय और बुद्धि से चलता है। न्याय, प्रेम और ममता नहीं है, तो लोकतंत्र में मुल्क आने की

जगह पीछे चला जाता है। अभी की घटनाएँ ऐसी हैं कि उसका उल्लेख करना मुझे तकलीफदेह लगता है। हम कश्मीर के बारे में फैसला करते हैं, हम पंजाब के बारे में फैसला करते हैं और हम तमिलनाडु के बारे में फैसला करते हैं, तो न्याय और बुद्धि से फैसला करेंगे, तो कड़ा फैसला भी लोग मारेंगे। मैं इस सदन में था, इंदिरा जी को मैंने देखा है, हम तो उनके चलते जेल में भी रहे। लेकिन मैंने देखा है कि कई मामलों में उनके फैसले आज भी मुझे प्रभावित करते हैं।

मैं कहूँगा आपसे कि न्याय जैसा आजादी के बाद और इस सत्र में भी रहा, न्याय आगे बढ़ना चाहिए। जिनके लिए आजादी थी, आज उनको कोई पूछता नहीं है। बाजार जब से आया है, तब से उनकी कोई पूछ नहीं, कोई जिक्र नहीं, उनका कोई नहीं है। आज ऐसा हो गया कि लोग अपनी-अपनी पार्टियों के मनिफेस्टो को संविधान बना रहे हैं कि हमने जो मनिफेस्टो निकाल दिया, वही संविधान है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूँ कि संविधान के परे कोई भी पार्टियों का मनिफेस्टो नहीं हो सकता और इस बात को जान लें कि अगर इस तरह की बातें चलेंगी, तो देश कहां जाएगा। जो लोग ठीक सोचने वाले हैं, वे बहुत दुखी हैं और तकलीफ में हैं कि देश कहां जा रहा है, हम कहां जा रहे हैं? यह जरूर है कि आज का वातावरण ठीक है, लेकिन क्या न्याय की बहस यहां हो पाती है, क्या हो पाई है? हमने जो फैसले किए हैं, उनमें कोई न्याय है, मैं उनका उल्लेख नहीं करूँगा, लेकिन हम लोग जब इस सदन में बैठते हैं, तो आप लोगों ने कभी नहीं देखा होगा कि सदन को चलाने में व्यवधान हो। जब भी सदन को चलाने में जय शी गड़बड़ होती है, तो हमको तकलीफ होती है। आडवाणी जी के बाद मैं यहां सबसे ज्यादा समय से हूँ। वह वर्ष 1972 में आए और मैं 1974 में आया था। मैंने जवाहर लाल नेहरू जी और शारदा जी को छोड़कर बाकी सारे प्रधानमंत्रियों को देखा है, यहां नेता सदन देखे हैं, मैंने बहसें देखी हैं, लेकिन उस बहस में हम लोग उस समय जो बोल पाते थे आज नहीं बोल पाते हैं। न्याय का जो नजरिया है, जस्टिस के लिए जो दिमाग होता है, इस देश में हम लोग महात्मा जी का नाम लेते हैं, उनकी सबसे बड़ी बात थी कि न्याय के लिए चाहे जो हो जाए, वह जनता से कट जाए, लेकिन सच बोलने में कभी पीछे नहीं रहते थे। खैर, यहां आबादी का मामला है, आर्थिक विषमता और सामाजिक विषमता का मामला है। आर्थिक विषमता और सामाजिक विषमता लिपटे हुए सवाल हैं, लेकिन कभी यहां सामाजिक विषमता पर बहस नहीं हुई। मां गुलाम क्यों है? अरे, जाति के चलते गुलाम है। आप कानून बना रहे हैं, कानून बनाने से बात नहीं बनेगी, समाज नहीं बदलेंगे हम, तो देश नहीं बनेगा। बुद्ध ने कहा है : "जगत बनेगा तो व्यक्ति बनेगा, व्यक्ति से जगत नहीं बन सकता।" इस सदन से देश नहीं बनेगा, जिस समाज से हम लोग आए हैं, उस समाज को योग्य बनाने का काम बहस से होगा, मन-परिवर्तन से होगा, नफरता से नहीं होगा। यही रास्ता हमारे पुरखों ने हमें सिखाया है, लेकिन निश्चित तौर पर यहां अच्छी-अच्छी बहस हुई है, लेकिन वह बहस लोगों को याद नहीं है, ऐसी बातें याद रह गयी हैं और रहना भी चाहिए। मैं आपके बाजू में उस दिन खड़ा था, जिस दिन यहां इस तरह की हरकत हो रही थी। मैं बहुत देर तक समझा नहीं कि स्मेल करने में क्या गड़बड़ हो रही है, लेकिन आप वहां जिस साहस से डटी रहीं और उस दिन को हम कभी भूल नहीं सकते हैं। इस पूरे सदन के सब सदस्यों की कोई गलती नहीं है, लेकिन वे जो 40-45 सदस्य थे, हम बाकी 500 लोग यहां बैठे रहे, किसी ने कुछ नहीं किया। हिन्दुस्तान में अंधेरा ही देखते हैं लोग, दिन भी होता है और रात भी होती है। दोनों तरफ देखने का नजरिया हिन्दुस्तान के लोकतंत्र में नहीं आएगा, तो बात नहीं बनेगी। मैं प्रधानमंत्री जी का, सोनिया जी का, नेता सदन का और आडवाणी जी का धन्यवाद करता हूँ। सुषमा जी ने जितने सवाल उठाए, हम हर बार उनके साथ रहे और हमने जो सवाल उठाए, उनमें उन्होंने साथ दिया। यहां मुलायम सिंह यादव जी, आचार्य जी, दारा सिंह चौहान जी आदि जो लोग थे, चाहे वे इस तरफ के हों या उस तरफ के हों, अच्छे सवालों पर एक रहकर हम लोग आगे बढ़े हैं और आज जो सब लोगों ने कामना की है कि सदन में रहते ऐसे रिश्ते हो जाते हैं कि यहां बोलते हैं और बाहर गले मिलते हैं, ऐसे रिश्ते बन जाते हैं कि आदमी भूलता नहीं है। निश्चित तौर पर हम लोगों की शुभकामना होगी कि सदन में जितने सदस्य हैं, वे फिर से आ जाएं, तो अगली लोक सभा - 16वीं लोक सभा ज्यादा बढ़िया चलेंगी, क्योंकि हम एक-दूसरे को समझ गए हैं। लोकतंत्र मनभेद की चीज नहीं है, मतभेद की चीज है।

अगर कभी किसी बात पर ऊंच-नीच हो गई हो किसी के साथ भी तो मैं आप सबको कहना चाहता हूँ कि इस मौके पर उन सारी बातों को भुलाकर हमें एक-दूसरे को माफ करके यहां से खुशी-खुशी जाना चाहिए। इस आखिरी सत्र के अंतिम दिन मैं सबको हिल-मिलकर चलने के लिए बधाई देता हूँ। सबसे ज्यादा धन्यवाद अध्यक्ष महोदय जी मैं आपको देना चाहता हूँ और आपका अभिनंदन करना चाहता हूँ। आप फिर से यहां आएंगी, इस आशा के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय: इसके लिए आपको धन्यवाद।

16.00 hrs.

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): अध्यक्ष महोदय, आपने 15वीं लोक सभा के आखिरी सत्र के आखिरी दिन में हमें अपनी बात कहने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मैं इस लोक सभा में पहली बार चुनकर आया हूँ। मेरी तरह कई सांसद पहली बार यहां आए हैं। हमारे दल की नेता मायावती जी के आशीर्वाद से पहली चुनकर यहां आने पर भी मुझे अपनी पार्टी का यहां नेता बनाया।

लोकतंत्र के इस सर्वोच्च मंदिर में चाहे आर्थिक मुद्दे हों या सामाजिक, राष्ट्रहित के हों या जनहित के, जब भी उन पर इस सदन में चर्चा हुई तो हमारी पार्टी की नेता ने हमेशा उनका समर्थन किया है। हो सकता है कि कभी-कभी आपको हमारी जिद के चलते दुख भी पहुंचा हो, लेकिन आप हमारी संरक्षक रही हैं और हैं भी, उसके लिए मैं आपसे माफी चाहता हूँ।

मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि बहुत सारे सदस्य इस सदन में पहली बार चुनकर आए हैं। उनमें से कइयों को बोलने का मौका नहीं मिला, उससे हम थोड़ा मर्माहत भी हुए हैं। हो सकता है आपकी मजबूरी भी रही हो। बहुत से इश्यू थे, बहुत सी बातें थी, जो हम नहीं कह पाए। मैं चाहता हूँ कि आने वाले दिनों में सभी पक्ष के लोग उन बातों को यहां रखेंगे। अभी तो सबसे यहां आने की होड़ लगी है। मेरी तरफ से यहां आने वालों को शुभकामनाएं हैं। हम भी चाहते हैं कि जो भी यहां के सदस्य हैं, वे फिर से चुनकर यहां आएँ।

लोकतंत्र के इस सर्वोच्च मंदिर पर बहुत से लोगों का भरोसा है। इसलिए कई लोगों के कई इश्यू हैं, जो जनहित के सवाल थे, पक्ष और विपक्ष के सभी लोगों ने एक साथ कई मौकों पर खड़े होकर एक स्वर से समर्थन किया और उन पर चर्चा की। जैसा कि अभी शरद जी ने कहा, मैं भी कहना चाहता हूँ कि सभी इश्यू पर जैसे भ्रष्टाचार है, अंतरराष्ट्रीय मुद्दे हैं, उन पर चर्चा होनी चाहिए थी। मैंने एक मुद्दा उठाया था कि इस देश में सामाजिक गैरबराबरी, भ्रष्टाचार बहुत बड़ी समस्या है। किसी चीज का श्रेय लेना भी उसी दायरे में आता है। हम सबको मिलकर आने वाले दिनों में जब लोकतंत्र के इस सर्वोच्च मंदिर में आएंगे तो यह अपेक्षा और विश्वास रखेंगे कि जनहित के जितने भी विषय हों, उन पर चर्चा हो।

मैं ग्रामीण क्षेत्र से आता हूँ। मैं पहली बार यहां आया और हमारी पार्टी की नेता ने मुझे यहां अपने दल का नेता बनने का मौका दिया। जो लोग नई लोक सभा में आएंगे, उन्हें भरपूर मौका मिलेगा अपनी बात कहने का। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको बधाई देता हूँ और आपका आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने बहुत सारे लोगों

को अपनी बात कहने का और जनहित के सवालों को उठाने का अवसर दिया।

PROF. SAUGATA ROY (DUM DUM): Madam, today is the thanks giving day. On the last day of the 15th Lok Sabha, may I take the opportunity to thank you for the gracious way in which you have conducted the House? Your grace, your dignity, your poise, and your equanimity in very adverse circumstances have caused admiration among all and sundry. Earlier this week, I was finding the usual smile missing from your face. You were obviously worried and anxious. I am happy to see that on the last day that trademark smile has returned to your face. We thank you. You added to the grace and dignity of the House.

I had the opportunity to be in the 6th Lok Sabha with your illustrious father, Babu Jagjivan Ram. I may say that you have carried forward his legacy as the leader of the oppressed classes with the best of your ability. May I wish you, Madam, long life?

We are one of those people who had the opportunity to sit both in the Treasury Benches till our leader Kumari Mamata Banerjee decided to withdraw and thereafter in the Opposition Benches. In the same 15th Lok Sabha we have occupied both the Benches.

When I met the Prime Minister in the corridors of Parliament after my first speech in the Opposition, he told me 'you have spoken well, but please do not be harsh to the people.' I regret if harsh words have hurt anybody. But, in the spirit of opposition, sometimes maybe we use wrong words. This must be our mistake, which I regret.

As everybody has said, none of us knows as to who will come back in the 16th Lok Sabha. It is up to the people of the country. But, having seen the 15th Lok Sabha for five years, I do feel that the Members of the 16th Lok Sabha will have to consider how to make the functioning of the Parliament more efficacious. If people look at the functioning of the Parliament, days together are wasted because of what we do. People feel disappointed. Maybe, we have not been able to fulfil our task. I am sure that the posterity will judge us in a kinder light and I hope that the future will be bright.

I would like to say only one thing about this Parliament. Whenever the question of communal riots or divisive matters has arisen, the House has stood like one. I remember in this House we discussed the riotous situation in Goalpara, Assam. All sections of the House came together to say that such things must stop. To recollect John Donne's words:

"Every man's death diminishes me for I am involved in mankind. Therefore, ask me not for whom the bell tolls, it tolls for thee."

We must stand together to keep this country united irrespective of class, creed or religion. Other Members have spoken of the poverty, deprivation, unemployment that still exist in this country. I am reminded of a poem which was found besides Pundit Jawaharlal Nehru's bed when he died. It was a poem by Robert Frost. He wrote:

"Woods are lovely dark and deep, but I have promises to keep and miles to go before I sleep and miles to go before I sleep."

We do not have any time to rest, to take this country out of the morass of poverty. We have many miles to go. It is true that we have achieved and crossed many milestones. But there are miles to go before I sleep. Let me again take the opportunity of thanking you for the grace and dignity with which you have adorned the Chair of the Speaker of the House. I take this opportunity for thanking the Prime Minister, the Leader of the House, the Chairman of the UPA, Leader of the Opposition, respected Shri Advaniji and leaders of all political parties.

Whatever happens in the elections, let us leave this House with pleasant memories so that posterity remembers us as people who tried to do something for the country. With these words, on behalf of our party, All India Trinamool Congress, and our leader, Mamata Banerjee, may I again respectfully thank you, Madam?

SHRI T.R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): Hon. Speaker, Madam, this is the last day of the 15th Session of the 15th Lok Sabha. With the blessings of my leader, Dr. Kalaignar Karunanidhi, I had been elected to the Rajya Sabha once from 1986 to 1992. This is my fifth term in Lok Sabha wherein I could find the maximum number of turmoils in a Session I could ever see, but it is not an insult of democracy. In democracy, we have to confront the policy and principles of any party. This is the temple

of democracy. This is the most important place. This is the apex body. Where will we confront the issues? Conflicts have to be settled here only. That is why, many friends of mine, the Members of Parliament on this side and that side, made some turmoil, but you should not take it to your heart. I think, you have the pragmatic approach.

With due support of the hon. President of Congress, the Leader of the Opposition and senior colleagues, you have drawn the strength to conduct this House in a nice way. Your conduct of the House and your approach towards the Members was so pragmatic and exemplary. I thank you on behalf of my friends in DMK and I wish you all success, hale and health.

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुर): अध्यक्ष महोदया, सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद देता हूँ और अभिनंदन करता हूँ क्योंकि आपने 15वीं लोकसभा बहुत धीरज से चलाई है और हमने कभी आपको गुरसा करते हुए नहीं देखा है।

महोदया, सदन में मैं 34 सालों से हूँ। वर्ष 1980 में मैं चुनकर आया था। मुझे याद है, उस समय मैं पीछे बैठता था और उस समय जो स्टालवर्ल्स, सदन में नेता थे, उनका भाषण सुनता था। उस समय सातवीं लोक सभा, आठवीं लोक सभा और पन्द्रहवीं लोक सभा की तुलना करते हैं, तो बहुत अंतर देखते हैं। कभी-कभी सोचते हैं कि हम चुन कर आए हैं। हमारी एकाउंटेबिलिटी है, as Executive is accountable to Parliament, Parliament is accountable to the people of the country.

देश की जनता के प्रति हमारा दायित्व है, हमारी एकाउंटेबिलिटी है। क्या हम इसका पालन सदन में कर रहे हैं? हमारे देश की जो आम जनता है, किसान हैं, उनकी समस्या हम कहां उठाएंगे? उनकी समस्या हमें सदन में ही उठानी है। जब उनकी समस्या हमें उठाने का मौका नहीं मिलता, तब मन में दुख होता है कि जिन्होंने हमें यहां चुन कर भेजा है, वे आशा करते हैं कि उनकी समस्या को हम यहां उठाएं। उनकी समस्याओं को हम यहां सदन में बताएं और उनका कुछ निदान हो तथा हम आगे बढ़ें। It is a fact that we have gone ahead, but the problems that we are confronted with are getting accentuated, and the crisis in many sectors is getting accentuated. तब कभी कभी इंद्रोस्पैक्शन करना पड़ता है कि हमारे ऊपर जो दायित्व है, उसका हम ठीक से पालन कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं। आज उस दिन को हम याद करते हैं। कभी-कभी हमने भी बोला है जब 1990 में तमाम विरोधी दल यहां से इस्तीफा देकर चले गये। एक ही बात कहकर गये कि हम सदन में लड़ें लेकिन हम कामयाब नहीं हुए। सदन से बाहर सड़क में जाकर मैदान में जाकर हम लोग लड़ेंगे।

यह सदन केवल सत्ता पक्ष का नहीं बल्कि विरोधी पक्ष का भी है और सदन दोनों पक्षों के सहयोग से ही चलता है। कभी कभी जब यह सहयोग नहीं होता है तब सदन नहीं चलता है लेकिन यह सहयोग दोनों तरफ से होना चाहिए। बातचीत करके, सलाह-परामर्श करके, क्या हम इस समस्या का निदान नहीं कर सकते? हम कर सकते हैं। जो करना चाहिए, लोकतंत्र में और खासकर हम लोग संसदीय लोकतंत्र में परस्पर बातचीत करके ही सदन को चलाने की समस्या का समाधान करते हैं लेकिन कभी कभी इसमें भी अड़चन-बाधा आ जाती है। वह हम लोगों को देखना चाहिए। We represent the people of our country, that is, the people belonging to poorer sections; the working class; the peasantry; and when we are not in a position to raise their problems, तब मन में कुछ दुख होता है।

आपने इस सदन को सुचारु रूप से चलाने की कोशिश की लेकिन कभी सफल हुई और कभी सफल नहीं हुई। लेकिन आपने जिस तरह से सदन को चलाया है, जिस तरह से सबकी बात सुनकर, कभी कभी In the usual meetings on the eve of the Session we used to raise certain issues, लेकिन उन इश्यूज पर जब चर्चा नहीं होती है, तो दुख होता है। मीटिंग में जो तय होता है, उसके बाद नहीं होता है, तब हमारे मन में कुछ चिंता होती है, शंका होती है और इस बार ऐसा हुआ कि आपने हमें चार मुद्दों को उठाने की इजाजत दी थी। Under Short-Duration Discussion, for the first time, I initiated a debate, but these four discussions remained inconclusive. I have never seen in any of the Lok Sabhas the discussion remaining inconclusive. जब हम कोई बहस उठाते हैं, उसके ऊपर चर्चा होती है तो वह चर्चा एक कंवलूजन पर पहुंचनी चाहिए। लेकिन जब ऐसा नहीं होता है तो शंका होती है। मैं प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद दूंगा और हमारे सदन के नेता जिनको हमने कभी गुरसा होते हुए नहीं देखा। वे कठिन समस्या होने पर भी हर समय हंसती रहती हैं। हम लोग गुरसा होते हैं लेकिन वह हर समय हंसती हैं, ऐसी सदन की नेता हमने पहले नहीं देखीं। अभी भी वे हंस रही हैं। हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। आडवाणी जी सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं। 13वीं लोकसभा में इन्द्रजीत गुप्त जी को फादर ऑफ दि हाउस बोलते थे। बालयोगी जी स्पीकर थे, उनको फादर आफ दि हाउस बोलते थे। अभी आडवाणी जी को फादर आफ दि हाउस हैं क्योंकि वे सबसे सीनियर मोस्ट सदस्य हैं। सुषमा जी बहुत अच्छी तरह से अपनी बात सदन में रखती हैं, उनको सिस्टर आफ दि हाउस कह सकते हैं। हमारी सबके लिए शुभकामना है। हम सब यहां से अब चले जाएंगे। अब चुनाव के मैदान में मिलेंगे। चुनाव के बाद कौन आएगा या कौन नहीं आएगा यह जनता के ऊपर निर्भर करता है। It depends on the people whether we will be elected or not. But we all will be in the field.

मैं एक बार फिर आपका धन्यवाद करता हूँ। हमने पहले कभी नहीं देखा कि अंतिम सत्र के अंतिम दिन वीडियोवटरी फंक्शन पर सदस्यों को बोलने का मौका मिला हो। 14वीं लोकसभा में भी हम दल के नेता थे लेकिन ऐसे पहले नहीं देखा कि वीडियोवटरी फंक्शन पर सबको बोलने का मौका मिला हो।

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Madam, with your permission, I wish to speak from this seat.

During my Higher Secondary education, in a class of History, we were asked to summarize the 18 Volumes of Mahabharata in one line. Many a time from the Chair, not necessarily by you, Madam, we have been told to minimize our speeches or to keep it as minimum as it can be. At that time, I always remembered what has been inscribed in the British Parliamentary Library, which records that "A wise man speaks only in three minutes." I am not going to take more time. The answer to

that question which the teacher had posed before us was also given by him. He said, "Mahabharata War was fought, Yudhistara got, Duryodhana not." That is not the true picture of Mahabharata when one goes into that.

When we are told from the Chair to restrict our speech, I always remember both of these two instances.

Another question was asked in the battlefield of Kurukshetra. The question was regarding who performed the best. Some said "I did"; some said "He did"; and others said "We did". But that question answered by Belalsen, who said: "I saw only one wheel of Sudarsana going around Kurukshetra and that Sudarsana Chakra did." At that time, I look at "Dharma Chakra pravartanaya" that is rested on top of the Speaker's Chair. It is Devanagari Script and it is a Sanskrit Sloka. That says, "The wheel of righteousness shall prevail." Whatever we have been doing in this House, we may take credit, but it is someone above us who is actually motivating us to do the righteous thing.

If there is some mistake somewhere which of course, "To err is human" does happen but that gets corrected because the wheel of righteous is turning. It is turning for the good of the nation. Here I would say that we could speak in the House. We are only 14 Members of Biju Janata Dal in this House of 545 Members but we could participate in different deliberations. We could express our opinion. It is just because of you Madam. You have protected our interests and the interests of smaller parties. You have appreciated the debates that we have participated and you have always tried to encourage Members to ventilate the voice of the people especially those of the downtrodden and the deprived.

Thank you Madam for conducting this House in a proper manner. I also thank all the Leaders of this House of different political parties, Leader of the House Shri Shinde; hon. Prime Minister; Leader of the UPA Mrs. Sonia Gandhi; hon. Advaniji from whom I have taken a lot of guidance to perform in this House and from many Members also and also the Leader of the Opposition, Madam Sushma Ji.

THE MINISTER OF AGRICULTURE AND MINISTER OF FOOD PROCESSING INDUSTRIES (SHRI SHARAD PAWAR): Madam Speaker, I am speaking in the capacity of Minister of Agriculture because as on today, my Membership of the Lok Sabha has been ceased. I got elected to the Rajya Sabha. I have no authority to speak as a Member of Parliament, Lok Sabha in this House but in the capacity of Minister of Agriculture, I got every right to say and I especially requested Madam Speaker to give me an opportunity because I was eager to express my gratitude to all the Members of the House particularly the Prime Minister, Chairperson of the UPA, Leader of the Opposition, Minister of Finance and each and every Member of the House who have always supported the cause of the farming community in this country.

It is true that India is a major farming country in the world but as a Minister of Agriculture, I have written it on some occasion, I got BRICS when the situation came to import wheat from some countries which was not liked by these Members.

I recollect when insufficient agriculture credit was provided, that time from Opposition side, there was a bitter criticism but I am extremely happy that corrective action has been taken by hon. Prime Minister and we have seen all together different season. It is true that a few years back, India was a country which was importing some of the things. But I am proud to say and I will give hundred per cent credit to the farming community of this country. Today, India is the largest exporter of rice in the world. India stood number one in the export of rice. India is the second largest exporter of wheat, sugar and cotton in the world; and last year earning by the agriculture export was Rs. 2 lakh and 32 thousand crore. This entire credit goes to the farming community of this country. I salute the farmers and simultaneously, I am grateful that each and every Member of the House supported for farmers' cause. That is the reason why I am here.

Secondly, India has changed the map of the world's horticulture. This year, our total horticulture production has gone beyond 260 million and our total food grain production has gone beyond 263.5 million. We have also established world record in export in fishery and meat. This entire credit goes to the farmers and others. Again I have no hesitation to say that each and every Member irrespective of his Party has supported the cause of the farmer. That is the reason why this happened.

SHRI GURUDAS DASGUPTA (GHATAL): Madam, my best wishes to you as the custodian of the House, the way you have protected our rights, sometimes you failed too. The point is that it is not a day of pleasantries. It is a day of introspection. At the end of the long journey – 10 long years -- there is a need for introspection, whether we have done our job, whether we have not been able to do our job.

I have great faith in the highest national forum, the temple of Indian democracy. I have a great regard and respect for the Indian pluralism. I have been in Parliament for long 25 years -- two terms in Lok Sabha and three terms in Rajya Sabha. There is a need for introspection for all of us whether we have done our job that we have been entrusted with.

India is at a cross road. We have done really well in food production. But there are many areas where it is grey and black. Despite production, the highest numbers of hungry people live in India. India is at a cross road and Parliament must restore it. If you like it or not I feel, I must bring the truth. India is at a cross road. We are facing unbelievable crisis in different spheres. Parliament must do its job. The credibility of the Parliament must be restored in the eyes of the millions of the people who have been watching us. Nation has a faith in Parliament. Parliament must be equal to the faith that India has reposed on it. We must remember – excuse me for using a strong word – that it is the Parliament, Parliament of the emerging nation, Parliament of multiple ideas, Parliament that is bound to be of opinions not coinciding but contradicting. Even then, Parliament is Parliament; it is not a boxing ring. The decline must be stopped, must be prevented. The decline must be prevented in all respect. On the one hand, number of days of Parliament has been shortened. From 100 days it has come to sixty. On the other hand, we do not function. Therefore, I am constrained to say that the decline must be stopped. We must have introspection and rededicate ourselves to the strengthening of the system, otherwise nation will be bereaved.

Madam, my thanks to you; my thanks to the Prime Minister; my thanks to the Leader of the Opposition; my thanks to Advaniji; my thanks to Soniaji; my thanks to all my friends who agree with me or disagree with me. I believe that at the end of the journey, we must believe that we should be doing much more than we have been able to do. At least, nation expects that we should fulfil the national task that has been reposed on us by millions of the people.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): माननीय अध्यक्ष महोदया, 14वीं लोक सभा के बाद 15वीं लोक सभा का भी सत्रावसान होने जा रहा है। इस अवसर पर आपने सभी को बोलने का मौका दिया, सभी लोग प्रसन्न हैं। इससे यह भी एक लक्षण दिखता है कि अंत भला तो सब भला। आज सत्र के अंतिम दिन कितने सौहार्दपूर्ण वातावरण में लोग अपनी बात रख रहे हैं! इस 15वीं लोक सभा में बरबादी ज्यादा हुई है।

हालांकि इसका रिकार्ड हिंदुस्तान की संसदीय प्रणाली के इतिहास में लोकपाल विधेयक पारित करने का था जो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ मजबूत कानून है। इस सदन को रिहब्लीटेशन वाला कानून, फूड वाला कानून इत्यादि को पास करने का गौरव प्राप्त है, वहीं अफसोस है कि अधूरा काम रह गया, क्योंकि भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए कुछ विधेयक पास करने के लिए तैयार थे, सूची में भी थे, लेकिन अफसोस है कि वे पास नहीं हो सके। बहुत से महत्वपूर्ण कानून थे, जो पास नहीं हो सके, अगली लोक सभा उन सभी को देखेगी। लेकिन 15वीं लोक सभा में कार्रवाई बाधित होने से समय की काफी बर्बादी हुई, जिसे लोगों ने सही नहीं माना। माननीय सदस्यों की राय से मैं सहमत हूँ कि "अब तौ नसानी अब न नसें हो।" जो बर्बाद हुआ सो हुआ। लेकिन फिर भी लोग कहते हैं कि "मुझे बर्बादी का कोई ग़म नहीं, ग़म की बर्बादी का क्यों चर्चा हुआ।" सवा सौ करोड़ की आबादी की यह प्रतिनिधि संस्था है और पूरे देश के लोगों की नज़र इस पर लगी रहती है, खासकर के गांव में जो गरीब और अंतिम आदमी बसता है, वह किसान है, मजदूर है, नौजवान है, गरीब आदमी है, बेरोजगार है, सभी ने आशा लगायी कि पार्लियामेंट में हमारा सवाल उठा या नहीं? हमारी समस्या का हल हुआ या नहीं? कितनी लोगों की हम से आशा है। लोकतंत्र के लिए हमारे पुरखों ने जो बलिदान दिया, उसका यह प्रतीक लोक सभा का संचालन साधारण काम नहीं था। आप इस आसन पर थीं और लोगों ने कहा कि गुरसा न करके भी इस 15वीं लोक सभा का काम आपने किया। सभी नेता अब 16वीं लोक सभा के लिए लड़ेंगे, कि "लड़ना भर मेरा काम रहा, यह जनता का संग्राम रहा।" इस हिसाब से आगे की लोक सभा की तैयारी शुरू हो गई है। आज अंत हो रहा है, लेकिन बहुत सौहार्दपूर्ण वातावरण में हम लोग बैठे हुए हैं और इसी के प्रति लोगों की आशा है। जो अधूरा काम रह गया, वह पूरा करेंगे। यह पार्लियामेंट समाज का दर्पण है, देश का दर्पण है। गांव में कोलाहल होगा, यहां भी कोलाहल होगा, जैसे पार्लियामेंट एक कड़ाही की तरह है। यहां सब्जियां कड़ाही में पैदा नहीं होती, सब्जियां खेतों में पैदा होती हैं और खेत से सब्जी लाकर के कड़ाही में काट कर, मसाला-मिर्च डाल कर स्वादिष्ट सब्जी बनती है, उसी तरह से जहां जनता रहती है, वहां नई बातें पैदा होती हैं और वह नई बातें सदन में आकर के कानून बनती हैं। यहां कोई नई बातें पैदा नहीं होती हैं। जिस तरह से सब्जियां कड़ाही में पैदा नहीं होती हैं। इसलिए बहुत से कानून बनें, कुछ बाकी हैं, जिनको हम 16वीं लोक सभा में पूरा करेंगे। सदस्यों को जनता की समस्याओं को उठाने का ज्यादा मौका मिलना चाहिए, साथ ही साथ सरकार को भी जवाबदेह होना चाहिए और विपक्ष को भी रचनात्मक होना चाहिए। लेकिन ऐसा दिखाई नहीं दिया। टूटा-बिखरा विपक्ष, इधर सत्ता की भी घोर अव्यवस्था। इस कारण से बहुत कुछ खराबी हुई, लेकिन महोदया आपने संभाल लिया। इसलिए हम सभी नेताओं के प्रति शुभकामना और आभार। प्रधानमंत्री जी, सदन के नेता, श्रीमती सोनिया गांधी जी, शरद पवार साहिब, इधर उपाध्यक्ष महोदय भी हैं, श्रीमती सुषमा जी, आडवाणी जी सबसे सीनियर नेता, नेता मुलायम सिंह जी, शरद यादव जी, श्री दारा सिंह चौहान, टी.आर. बालू साहिब और सभी नेताओं और माननीय सदस्यों के प्रति शुभकामना। बाबू लालू की तरफ से और राष्ट्रीय जनता दल की तरफ से सभी को हम शुभकामना देते हैं और बधाई देते हैं कि 15वीं लोक सभा पार लग गई। 16वीं लोक सभा में इसी तरह से लोग चुनकर आएँ और जनता की समस्या का समाधान करें, देश को आगे बढ़ाने का, लोकतंत्र को मजबूत करने का, गरीबी, बेरोजगारी और विषमता हटाने का काम करें। यही हमारी शुभकामना है। सभी माननीय सदस्यों के प्रति हम आभार मानते हैं।... (व्यवधान)

महोदया, हमारे मुहल्ले के लोग गरीबों की समस्याओं को ज्यादा उठाते रहे हैं। इसलिए फिर इसी तरह से वे लोग चुन कर आ जाएँ, हमारी शुभकामना है।

इन्हीं शब्दों के साथ सभी को शुभकामना देता हूँ। अगर कहीं कोई चूक हुई हो तो भूल-चूक लेनी-देनी माफ हो। सभी लोग गुरताखी माफ करेंगे। यही हमारी प्रार्थना है, यही आराधना है। सोलहवीं लोक सभा के लिए सब के प्रति शुभकामना है।

***SHRI O.S. MANIAN (MAYILADUTHURAI):** Hon'ble Madam Speaker. Vanakkam. As the Presiding Officer of the House, Madam Speaker, you have successfully conducted the 15th Lok Sabha. This is the last sitting of 15th Lok Sabha. I must mention that this House was disrupted for so many days on several issues of national interest. I wish and hope that the 16th Lok Sabha would not be disrupted and function smoothly. I extend my heartfelt wishes to the Members of Leaders of Lok Sabha on behalf of General Secretary of AIADMK and Hon'ble Chief Minister of Tamil Nadu, Dr. *Puratchiththalaivi* Amma. .

श्री शशीकुंदीन शारिक (बागमुता): ज़नाब ऑनरेबल स्पीकर, ज़नाब ऑनरेबल मोअज़िज़ मेम्बराने लोक सभा, इस वक्त हम पन्द्रहवीं लोक सभा के इख्ततामी इज़लास में मोहतरम स्पीकर साहिबां ने हम को दो शब्द बोल बोलने का समय दिया, इसके लिए इनके शुक्रगुज़ार हैं। ये ज़गह जहां हम हैं, ये हिन्दुस्तान का दिल है, हिन्दुस्तानी आवाम का दिल है, हिन्दुस्तान के करोड़ों गरीब लोगों की उम्मीदों का मरकज़ है, उनकी तमन्नाओं का एक महवर है। इसी हाउस ने हिन्दुस्तान को एक आईन दिया है, एक दस्तूर दिया है मुल्क चलाने का, एक दस्तूर दिया है यह हाउस चलाने का, एक लाहे-अमल ज़िन्दगी का इस मुल्क को दे दिया है। लिहाज़ा, इस हाउस की कद्र बहुत बड़ी है। लेकिन अगर हम अपनी हरकतों से खुद इसकी कद्र को घटाएं, अगर हम अपनी हरकतों से खुद इसकी कीमत कम कर लें, वह आवाम का कसूर नहीं, वह हमारा कसूर होगा।

मेरी खुशकिस्मती है कि एक छोटे इन्सान को इतने बहुत महान और बड़े इन्सानों के दरम्यान बैठने का और बात करने का मौका मिला है तो वह इसी ज़म्हूरियत की वज़ह से, इसी दस्तूर की वज़ह से हुआ है, वरना यह मुमकिन नहीं था।

मैं मुसलमान हूं और बहैसियत मुसलमान मुझ पर हुक्म है - हुबुल वतन-ऐ-निसफुल इमान। इमान तो उतनी देर तक मुकम्मल नहीं होगा जब तक न मुसलमान अपने वतन के साथ प्यार और मोहब्बत करेंगे। मैडम स्पीकर, बहुत दिवकतें आपके सामने रहीं, इमताहान पर गुज़रीं आप। मुश्किलात का आप ने मुकाबला किया लेकिन हाउस के वक़ार और डिग्नटी को आप ने बरकरार रखा। आपको दिल से मुबारकबाद देता हूं। दिल उछलता है यहां देखकर, इतने बड़े, महान, हमारे दरम्यान ज़नाब आडवाणी साहब, जो अरबी साला तारीख हैं इस मुल्क के, हमारे सामने हैं।

हमारी मोहतरमा सुषमा जी, इनकी तकरीरें सुनने के लिए हम दौड़ कर आते थे, सुनते थे और उनमें सिर्फ देश की दर्द होती थी, देश के लोगों की बात होती थी। हम जितने भी नेता हैं, इख्तलाफ राय लाज़िमी है, फिर जम्हूरियत नहीं रहेगी, अगर हम इख्तलाफ राय आपस में नहीं करेंगे। अगर हम सिर्फ मखन लगाने की बात करते रहेंगे तो हमारे हालात ठीक नहीं रहेंगे। नुक़चीनी और तनकीद, ये जम्हूरियत की जान हैं और उसकी रूह है, लेकिन इसमें सदकदिली और नेक नियती से करना चाहिए। उसमें नीयत साफ़ होनी चाहिए, नीयत ठीक होनी चाहिए और अलहमदु लिल्लाह हमें ऐसे लगा कि सभी नेता, तमाम रहनुमा, मुल्क के जितनी भी पार्टियों के हैं, वे इतिहाई खुलुस नीयत के साथ लोगों के मसायल को सामने रखते थे। हम वज़ीरेआज़म के शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने यूपीए की कयादत की और इख्तलाफ इनके साथ किए लोगों ने, लेकिन इनके दामन पर कोई दाग नहीं लगा। एक साफ़ दामन, आज नहीं, मैं इनको राज्य सभा से जानता हूं, जब ये वहां हिज़्बे इख्तलाफ के रहनुमा थे। मुख़तर सर बात, बल्कि बात न करना, ये स्वामोशी गुफ़तगू है, बेजुबानी है जुबां मेरी और न बोलने में ये सब कुछ बोल जाते थे, पार्टी और मुल्क की रहनुमाई करते रहे और जहां भी गए, मुल्क के लिए नाम पैदा कर लिया।

मोहतरमा सोनिया जी, बीच में इनकी तबीयत खराब हो गई। अब अल्ला-ताला ने इनको सेहत बख़्शी है और मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह-ताला इनको लम्बी उम्र दे, सेहत दे। इन पर नज़रे लगी हुई हैं कि ये इस मुल्क को, सबके साथ मिल कर आगे चलाएंगे। मोहतरम, कमल नाथ जी, पार्टियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर जिस जदोजहद और जिस मेहनत के साथ चलाने की कोशिश करते थे, वह इन आंखों ने देखा है, उसके लिए उनको मुबारक। जनाब शरद पवार साहब तो एक सीनियर तीडर हैं, इनके बारे में मैं क्या कहूँ, लेकिन जिस तरीके से इन्होंने, कई मीटिंग्स में इनसे मिलने का हमको मौका मिला। जिस सब्र और शांति से इन्होंने बातें सुनीं, इनके शुक्रगुज़ार हैं। आप लोगों से हमने बहुत कुछ सीखा। हम बहुत छोटे लोग हैं, लेकिन आप सब लोग जो यहां बैठे हैं, आगे-पीछे बैठे हैं, आप सब इल्म वाले हैं, जानने वाले हैं। ऐलेमोर ऐहेलेकलम हैं, ऐहेतेजुबान हैं, अल्लाह का शुक्र है कि आप लोगों के साथ हमें बैठने का मौका मिला। इसी तरह अपोजिशन के रहनुमा, मैं सब का नाम तो अलग-अलग नहीं ले सकता, इनके लिए इनकी मोहब्बत और इज़जत हमारे दिल में है और यकीनन वह है। इसीलिए कि इनके रोल को, जो इन्होंने यहां अदा किया, उसको हम सराहते हैं।

अफ़सोस इस बात का है कि कई अच्छे कवानीन, जो मुल्क की मफ़ादात के लिए लाने थे, वे पास नहीं हो पाए, इसका अफ़सोस है, लेकिन जो कवानीन पास हुए हैं, जिनका जिक्र इन्होंने भी किया और बहुत से लोगों ने किया, वे संगेमील की हैसियत रखते हैं, वे एक रेशन मुस्तकबिल की ज़मानत है, हमारे मुल्क के लोगों के लिए। यह अल्फ़ाज़ कह करके मैं अपनी पार्टी की तरफ से, अपने साथियों की तरफ से, अपने कायदीन की तरफ से और अपने आवाम की तरफ से, जिनकी मैं रहनुमाइ करता रहा, उनकी नुमाइंदगी करता रहा, उनकी तरफ से आप सब का शुक्रिया और मैडम आपका शुक्रिया, आपके सब्र और आपकी हिकमतें अमली की दाद देनी पड़ती है। जब हालात बहुत खराब होते थे, जिस वक्त आप हाथ बांध कर कहती हैं एडजानर्ड, बस मामला ठप। सब अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाते थे। लिहाज़ा मैं यही कहूंगा, बशीर बद्र एक बार पाकिस्तान गए थे, वहां से आने के बाद हमने पूछा था, वया बात है सियासत की, तो उन्होंने कहा कि हिन्दू भी मज़े में है, मुसलमान भी मज़े में है, इंसान परेशां हैं यहां भी और वहां भी।

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदिशा): धन्यवाद, अध्यक्ष जी।

आज 15वीं लोक सभा के अन्तिम सत्र का अन्तिम दिन है। हम यहां से बहुत सी खड़ी-मीठी यादें लेकर जा रहे हैं। यह लोक सभा अनेक विसंगतियों से भरी रही है। जब इस लोक सभा का इतिहास लिखा जायेगा तो एक पन्ने पर यह दर्ज होगा कि सबसे ज्यादा सदन की कार्यवाही जिस लोक सभा में बाधित हुई, वह 15वीं लोक सभा थी। लेकिन उसी के दूसरे पन्ने पर यह दर्ज होगा कि सबसे ज्यादा चिर-प्रतीक्षित विधेयकों को पारित करने वाली और बहुत उल्लेखनीय विधेयक पारित करने वाली भी 15वीं लोक सभा थी। अध्यक्ष जी, 40 साल से देश लोकपाल की प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे गर्व है कि इस लोक सभा ने इस देश को लोकपाल देने का काम किया। तेलंगाना के लोग वर्षों से तेलंगाना निर्माण की बात जोह रहे थे। इस लोक सभा ने तेलंगाना को जन्म दिया। भूमि अधिग्रहण विधेयक, खाद्य सुरक्षा विधेयक, मैन्युअल स्कैवेंजिंग विधेयक, स्ट्रीट वेंडर्स विधेयक, ये ऐसे मील के पत्थर विधेयक हैं, जो इसी लोक सभा ने पारित किए हैं।

यह सदन उलझा भी बहुत और उलझ कर सुलझा भी है। मैं बहुत प्यार से कह रही हूं, मेरे भाई कमलनाथ अपनी शरायत से इस सदन को उलझा देते थे और आदरणीय शिन्डे जी अपनी शरायत से उसे सुलझा देते थे। इस शरायत और शरायत के बीच में बैठी हुई सोनिया जी की मध्यस्थता, आदरणीय प्रधानमंत्री जी की सौम्यता, आपकी सहनशीलता और आडवाणी जी की न्यायप्रियता के कारण यह सदन चल सका। आज के दिन मैं अपने पूर्व नेता सदन आदरणीय पूणव मुखर्जी को भी याद करना चाहूंगी, लोकतांत्रिक संस्थाओं में उनकी आस्था ने भी इस सदन को चलाने में बहुत कारण भूमिका निभाई। यह इसलिए हुआ, क्योंकि, भारतीय लोकतंत्र के मूल में एक भाव है और वह भाव क्या है। वह भाव यह है कि हम एक दूसरे के विरोधी हैं, मगर शत्रु नहीं हैं और हम विरोध विचारधारा के आधार पर करते हैं, हम विरोध नीतियों के आधार पर करते हैं, हम विरोध कार्यक्रमों के आधार पर करते हैं। अलग-अलग हैं, इच्छावादी विचारधारा है, अलग-अलग नीतियां सरकार बनाती है, अलग-अलग कार्यक्रम बनाती है, उस पर हम आलोचना करते हैं। वह आलोचना प्रखर भी होती है, लेकिन प्रखर से प्रखर आलोचना भी भारतीय लोकतंत्र में व्यक्तिगत सम्बन्धों के आड़े नहीं आती।

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष के रूप में आडवाणी जी से मैं मार्गदर्शन लेने जाती थी। वे हमेशा मुझे एक ही निर्देश देते थे कि सदन की गरिमा के अनुरूप ही आचरण करना है। दलगत राजनीति से ऊपर उठकर काम करने का हमेशा उन्होंने मुझे सुझाव दिया और आज मैं इस सत्त्वाई को स्वीकार करना चाहूंगी कि नेता प्रतिपक्ष के रूप में जो भूमिका मैं निभा सकी, वह आदरणीय आडवाणी जी के आशीर्वाद के कारण निभा पाई।

अध्यक्ष जी, अब हम चुनाव में जा रहे हैं। चुनाव में जाते समय चाहिए तो यह था कि मैं सब को विजयी भव का आशीर्वाद देती, लेकिन अगर मैं वैसा करूंगी तो असत्य होगा। इसलिए मैं विजयी भव का आशीर्वाद तो नहीं दे पा रही, लेकिन यशस्वी भव का आशीर्वाद सब को दूंगी। मैं चाहूंगी कि यशस्विता से हम सब चुनाव लड़ें।

अध्यक्ष जी, आपकी तो मैं कायल हूं, जिस बात को वासुदेव जी ने सार्वजनिक रूप से कहा, मैंने निजी रूप में बहुत बार आपसे कहा है कि आपका स्वभाव और उस स्वभाव में क्रोध न आने का इस सदन को चलाने में सबसे ज्यादा योगदान रहा। इसलिए मैं कहना चाहूंगी कि हम सब यशस्विता से चुनाव लड़ें, जनता जिसे जिताकर भेजे, क्योंकि, लोकतंत्र में जनता की अदालत सबसे बड़ी अदालत होती है, विजय और पराजय का फैसला वही करती है। वह जिसे भी जिता कर भेजे, हम 16वीं लोक सभा में आएं और जो भूमिका हमें जनता दे, उस भूमिका को हम इसी सौहार्द से निभायें। जिस सौहार्द से आज हम इस अंतिम सत्र के अंतिम दिन पर, जिस नोट के ऊपर हम जा रहे हैं, इसी नोट पर हम वापस लौट कर आएँ और बहुत सद्भावना और सौहार्द के साथ सोलहवीं लोक सभा चलाएं। यही शुभकामना देते हुए, मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं।

THE PRIME MINISTER (DR. MANMOHAN SINGH): Madam Speaker, as we come to the end of the journey of the 15th Lok Sabha, I join all Members of this august House to pay tribute to the manner in which you have conducted our proceedings.

Madam, in parliamentary life, there are bound to be differences among parties but there must also be ways and means of finding pathways to bring minimum amount of consistency and reconciliation so that the ship of the Indian State can move forward. And we have seen that, on certain crucial matters, this House has the capacity, the will, to rise above partisan strife and to find pathways of national reconciliation.

The manner in which the State of Telengana is being born is yet another indication that this country is capable of taking some of the most difficult decisions without any rancour, without worrying too much about the pros and cons of things that do not matter and we can take pride in the fact that the Telengana State, whose quest for being born was pending for the last sixty years, has ultimately seen the light of day.

The Food Security Bill is yet another landmark legislation. It will create a ray of hope among those who are deprived sections of our community. It will encourage our farmers to produce more. Sharad Pawar Ji has described the manner in which the agricultural situation in our country has improved and I compliment him for the manner in which he has guided the destiny of the Agriculture Ministry. Obviously, all Members of the House have played a very important role in bringing that outcome about.

Madam, we are now entering a phase where the people of India will once again have an opportunity to assess, to pass their judgement on the performance of Government, weaknesses of our Government, the achievements of the Government and it is in that process, that once again a new sense of consensus will emerge which will carry our country to new pathways.

I thank all the hon. Members of the House. I thank the Leader of the Opposition. I thank my colleague, Shri Sushil Kumar Shinde who, as the Leader of the House, has performed his duties with aplomb. I give all Members of this august House my best wishes and let us hope that, out of this strife, out of this tense atmosphere which prevailed for some time, there will be a birth of a new atmosphere of hope.

With these words, I conclude my remarks by once again thanking you, Madam Speaker, for the manner, the grace with which you have conducted the proceedings.

17.00 hrs.

अध्यक्ष महोदया : सम्मानित सदस्यगण, पन्द्रहवीं लोक सभा का सत्प्रवासन होने जा रहा है। आज जब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो स्वभावतः विगत पांच वर्षों की स्मृतियाँ जीवंत हो उठी हैं। कितने ही ऐसे अवसर आए जो मिठास से भरे थे मानो बसंत ऋतु आ गई हो और फिर बिन बुलाए मेहमान की तरह अग्नि परीक्षा की अनेकानेक घड़ियाँ आ जाया करती थीं और धर्मसंकट द्वार पर दस्तक देने लगते थे। पर हर बार मैंने और मुझे लगता है हम सबने यह महसूस किया कि इस सदन के पास अथाह आंतरिक शक्ति है जो इसे चलाती है; इस पर कितने भी आघात क्यों न हों, इसकी शक्ति क्षीण नहीं होती। पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम इसे आहत करें। निःसंदेह यह शक्ति देश के सीधे-सच्चे मेहनतकश लोगों से इस सदन को मिली है, जो हमारे लोकतंत्र को ऊर्जावान बनाए रखना चाहते हैं। मैं उन्हें नमन करती हूँ।

मेरे लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि 3 जून, 2009 को सभा ने सर्वसम्मति से मेरा चयन करके मुझे लोक सभा की प्रथम महिला अध्यक्ष बनने का सम्मान प्रदान किया। संविधान की गरिमा सदैव बनाए रखने का अपने सम्मानित पूर्ववर्तियों द्वारा स्थापित नियमों और परिपाटियों के आधार पर निष्पक्षता से सभा का संचालन करने का गंभीर दायित्व मुझपर था जिसका मैंने अपने सामर्थ्य अनुसार सदन के अंदर और बाहर हमेशा ध्यान रखा। लोगों की सामूहिक अभिलाषा को प्रतिबिंबित करने और उसकी नियति निर्धारित करने की जिम्मेदारी इस सदन को सौंपी गई है; यह तभी संभव है जब विभिन्न विषयों पर चर्चा और विचार-विमर्श हो तथा जनता के समग्र कल्याण के लिए कारण कानून बनें, विशेष रूप से तब जब ये मामले निर्धन और उपेक्षित वर्ग, अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों, महिलाओं और बच्चों के जीवन पर प्रभाव डालते हों। अतः मैंने सभी सदस्यों विशेषकर प्रथम बार निर्वाचित सदस्यों को अपने-अपने मत व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

आजादी के बाद हमने समतामूलक समाज रचना को अपना राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित किया जिससे समाज में किसी प्रकार की गैर-बराबरी न हो। हमारी संसद ने इसके लिए आवश्यक कानून भी बनाए। पर यह नितांत क्षोभकारक स्थिति है कि आज भी समाज में जातिगत भेदभाव और अत्याचार का विकराल रूप दिखाई देता है। शोषित, पीड़ित, वंचित लोग जीवन की त्रासदी का संताप झेल रहे हैं। अब इसका अंत होना ही चाहिए और संसद को ही यह करना होगा। इसी कारण इससे संबंधित चर्चा को मैंने सदैव प्राथमिकता दी।

मुझे प्रसन्नता है कि सदस्यों ने अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों के सरोकारों को उत्साहपूर्वक उठाया। कभी-कभी जब सभा में विभिन्न मत-मतांतरों के साथ विचारोत्तेजक बहसें हुईं और उनका कोई समाधान नजर नहीं आया तब विकल्प निकालने के लिए मैंने विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ बैठकर बातचीत की। उन सभी ने मेरी दुविधा समझी और हम कई बार उपाय ढूँढने में सफल रहे, कई बार असफल भी हो गए।

महिला सदस्यों की भागीदारी पहले से अपेक्षाकृत अधिक है; उनमें से कई विदुषी हैं, कुशाग्र वेदा की धनी हैं और देश में उनकी अपनी पहचान और सम्मान है। पर मुझे संतोष तभी होता जब महिलाओं की संख्या कहीं अधिक होती। लोग मुझे महिलाओं से पक्षपात करने के लिए दोषी ठहराते हैं, जो मैं गर्व से स्वीकार करती हूँ। दिसम्बर, 2012 के निर्भया कांड के पश्चात् सभा ने एक आवाज में इस हृदयद्रावक घटना की भर्त्सना की तथा शीघ्र ही एक नया कानून बनाकर स्वयं को समय की कसौटी पर खरा सिद्ध किया।

मुझे सदन को यह सूचित करना है कि लोक सभा की प्रक्रिया और कार्य संचालन नियमों को लिंग निरपेक्ष बनाकर हमने एक उल्लेखनीय कदम उठाया है। आज तक विधानों में केवल पुरुषवादी शब्दों का प्रयोग होता आया था, पर लोक सभा के नियमों में ऐसे शब्दों का प्रयोग अब से होगा, जो पुरुष और स्त्री दोनों के लिए समान रूप से प्रयुक्त हों। यह भारत में अपनी तरह की एक नयी पहल है और मुझे विश्वास है कि इसका व्यापक रूप से अनुकरण किया जायेगा।

पूर्व परम्परा के अनुसार, लोक सभा सचिवालय पन्द्रहवीं लोक सभा और संसदीय समितियों द्वारा किये गये कार्य का विस्तृत विवरण देते हुए एक स्मारिका प्रकाशित करेगा। तथापि, मैं संक्षेप में कुछ मुख्य कार्यों और विशेष घटनाओं के बारे में बताना चाहूंगी।

इस लोक सभा की अवधि में, मैंने अविलम्बनीय मामलों पर दो स्थगन प्रस्तावों की अनुमति दी। संसद सदस्यों द्वारा प्रश्न काल के बाद और उस दिन की बैठक समाप्त होने के समय तत्काल निपटारे जाने वाले लोक महत्व के 3316 मामले उठाये गये। माननीय सदस्यों ने नियम 377 के अधीन 4019 मामले उठाये। 37 ध्यानाकर्षण प्रस्ताव लाये गये। मंत्रियों ने विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर 598 वक्तव्य दिये, जिनमें माननीय प्रधान मंत्री द्वारा दिये गये वक्तव्य भी शामिल हैं। 6778 तारांकित प्रश्न सूचीबद्ध हुए, जिनमें से 650 प्रश्नों का मौखिक रूप से उत्तर दिया गया। मैंने छोटे-बड़े अलग-अलग दलों के सदस्यों को प्रश्न पूछने का भरसक मौका दिया। शेष तारांकित प्रश्नों और 73160 अतारांकित प्रश्नों के लिखित उत्तर सभापटल पर रखे गये। सात आधे घंटे की चर्चाएं भी की गयीं।

पन्द्रहवीं लोक सभा ने हाथ से मैला उठाने वाले कर्मियों के नियोजन का प्रतिषेध और उनका पुनर्वास विधेयक, 2013; महिलाओं का कार्य स्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतिरोध) विधेयक, 2012; खाद्य सुरक्षा विधेयक, 2013; नःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार विधेयक, 2009; लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण विधेयक, 2012; दण्ड विधि (संशोधन) विधेयक, 2013; आंध्र प्रदेश पुनर्गठन विधेयक, 2014; भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिरूप और पारदर्शिता अधिकार विधेयक, 2013; लोकपाल और लोकायुक्त विधेयक, 2011, राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण विधेयक, 2010; कंपनी विधेयक, 2012 में संशोधन सहित 181 विधेयक पारित किये गये। गैर सरकारी सदस्यों के 372 विधेयक पुरःस्थापित किए गए। महत्वपूर्ण विषयों पर 10 गैर सरकारी सदस्यों के संकल्प भी प्रस्तुत किये गये।

कई कार्यविधि संबंधी सुधार करके सभा की प्रक्रिया को सुचारु बनाया गया। सदस्यों को बकाया अनुदानों की उन मांगों पर, जिन पर सभा में चर्चा नहीं की गयी थी, कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत करने की अनुमति दी गयी। लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमों और अध्यक्ष के निर्देशों में संशोधन करके प्रश्न काल को सुकर बनाया गया। इसी प्रकार, शून्यपत्र में मामले उठाने की एक नई पद्धति शुरू की गई। नियम 377 के अधीन मामले सभा पटल पर रखने संबंधी प्रणाली में भी बदलाव

किया गया। हमारी संसदीय समितियों ने सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की बड़ी एकाग्रता से समीक्षा की। दो नई समितियाँ- (1) लोक सभा सदस्यों के साथ सरकारी अधिकारियों द्वारा नयाचार प्रतिमान का उल्लंघन और अवमानपूर्ण व्यवहार संबंधी समिति तथा (2) अन्य पिछड़े वर्गों के कल्याण संबंधी समिति गठित की गईं। समितियों ने नियमित रूप से बैठकें की, विभिन्न वर्गों के लोगों से मशविरा करने के लिए देश के अनेक स्थानों की यात्रा कर अपनी सिफारिशें दीं। लोक सभा की स्थायी समितियों ने 652 प्रतिवेदन प्रस्तुत किये। समितियों की कार्य प्रणाली में परिवर्तन किये गये। पहले, संसदीय समितियों के दौरे के समय स्थानीय सांसदों को उनकी बैठकों में आमंत्रित नहीं किया जाता था। उनके योगदान के महत्त्व को समझते हुए अब उन्हें आमंत्रित किया जाता है।

हमारे सदस्य लोगों की समस्याएँ समझते हैं, फिर भी अपनी जानकारी को निरंतर बढ़ाना उनके लिए आवश्यक है। उनकी सहायता के लिए तीन अतिरिक्त संसदीय मंच- (1) आपदा प्रबंधन, (2) दस्तकार और शिल्पकार तथा (3) सहस्रवर्षी विकास लक्ष्य स्थापित किए गए। ये मंच सदस्यों को किसी विशिष्ट विषय और उसके दूरगामी प्रभाव पर सलाह-मशविरा करने का अवसर प्रदान करते हैं। इन मंचों में समसामयिक विषयों पर सार्थक चर्चाएँ हुईं तथा उपयुक्त सुझाव उभरकर सामने आए।

जैसा कि आप जानते हैं, हमारा संसद भवन एक ऐतिहासिक इमारत है। इस अनोखे और भव्य भवन के वास्तुशिल्प को हू-ब-हू बनाए रखने के लिए संयुक्त संसदीय समिति का गठन किया गया। यह समिति इसकी मज़बूती, विकास और सौन्दर्य से जुड़े प्रश्नों पर परामर्श देती है। हमने कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के उद्देश्य से सौर-पैनल स्थापित किए हैं। परिसर में पॉलीथिन का इस्तेमाल प्रतिबंधित कर दिया गया है। हमारा कार्यालय यथासंभव कागजविहीन हो, इस पर कार्य हो रहा है। संसद की गतिविधियों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। हमारे उद्यान में लगे पुराने विशाल वृक्षों पर खास तवज्जों दी जा रही हैं और पिछले पाँच वर्षों में देश के कई तुल्यवर्ष वृक्ष यहाँ लगाये गये हैं। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह हमारा अभिनव प्रयत्न होगा। 13 मई, 2012 को हमने विशेष बैठक बुलाकर अपनी संसद की पहली बैठक की 60वीं वर्षगांठ मनायी। लोकतंत्र को देशवासियों ने आत्मसात कर लिया है। उन्होंने ही इसे पूर्णवान बनाया है। हम चाहते हैं कि लोकतंत्र के सभी हितधारक, विशेष रूप से युवा और बच्चे संसद को नज़दीक से देखें, इसे समझें, इसमें विश्वास करें। मैं स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों को संसद आने के लिए निमंत्रित करती रही हूँ। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, मणिपुर और अन्य राज्यों के दूर-दराज़ के क्षेत्रों के स्कूली बच्चे संसद भवन देखने आए। ये बच्चे मुझसे हमारी संसदीय प्रणाली के बारे में ऐसे प्रश्न पूछते थे कि मुझे उनके बृहत् ज्ञान पर विस्मय भी होता था और अभिमान भी। संसद तक लोगों की पहुँच बढ़ाने के लिए नःशक्त व्यक्तियों के लिए नई सुविधाएँ शुरू की गई हैं। संसदीय संग्रहालय में टिफ्टिडीन आगन्तुकों के लिए ब्रेल लिपि को शामिल किया गया है। विभिन्न राज्यों तथा अन्य देशों से आये विधानमंडल के सदस्यों तथा अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन करने के लिए हमारा संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो सुविख्यात है।

हाल ही में भूतान के स्पीकर व सांसदों ने भी इसके विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का लाभ उठाया। पहली बार म्यांमार जाकर उनकी संसद के कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। अब स्पेनिश तथा अरबी जैसी विभिन्न विदेशी भाषाओं में भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। संसदीय कूटनीति का प्रभाव दिनोंदिन बढ़ रहा है। राजनयिक विचार-विनिमय का यह एक अभिन्न अंग बन गया है। हमारे सांसदों ने विभिन्न द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंचों पर अपने भाषणों से देश का मान बढ़ाया है। कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया गया, जिनमें राष्ट्रमंडल देशों के अध्यक्षों एवं पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन, सातवां महिला अध्यक्ष सम्मेलन, दक्षिण देशों की संसदों के अध्यक्षों एवं सांसदों के संघ का पांचवां सम्मेलन शामिल है। हमने अमेरिका के राष्ट्रपति महामहिम श्री बराक ओबामा की मेजबानी की, जिन्होंने भारतीय संसद के केंद्रीय कक्ष में दोनों सदनों के सांसदों को संबोधित किया। यह एक वास्तविकता है कि अन्य देश हमारे लोकतंत्र की ओर आशा भरी नजरों से देखते हैं और अपने जटिल विवादों को हल करने के लिए अक्सर हमारा उदाहरण देते हैं। हमारा लोकतंत्र विश्व का सबसे विशाल लोकतंत्र है, पर इतना काफी नहीं है। इससे सबसे उत्तम और समावेशी लोकतंत्र भी होना चाहिए। जब मैं इस लोक सभा की उपलब्धियों को याद करती हूँ, तब मैं उन दिनों को भूल नहीं सकती जब मैं बेहद व्यथित हुई। बार-बार होने वाले व्यवधानों के कारण रथगन तथा पूरे सत्र को बगैर कोई कार्य किए स्थगित करने पर मुझे इतनी वेदना हुई कि उससे उबर पाना मुश्किल हो गया। ये गतिरोध वज्रपात की तरह हमारी संसदीय व्यवस्था टूट पड़े थे। संसद में मेरा अगाध विश्वास है। मैं मानती हूँ कि यह मूक की वाणी है, अशक्त की शक्ति का अनन्त स्रोत है। इसलिए चाहूँगी की कर्णभेदी तुमुल कोलाहल के स्थान पर इस सदन में अकाट्य तर्कों और शब्दों का सम्मोहन छा जाए। मैं हम सबकी इस विफलता से मर्माहत हूँ कि विगत लोक सभाओं के मुकाबले 15वीं लोक सभा के दौरान बहुत कम काम हुआ। यह हमारा दायित्व था कि सदन का काम-काज शत-प्रतिशत हो, इसकी विश्वसनीयता में गिरावट न आए। कई अप्रत्याशित और अवांछित घटनाओं ने इस सभा के निर्बाध संचालन और काम-काज को पंगु कर दिया। वस्तुतः यह केवल हमारे लिए ही नहीं, संसदीय लोकतंत्रीय प्रणाली के सभी हितैषियों के लिए पीड़ादायक है। हमारे प्रगतिकामी देश की श्री-समृद्धि और उसे शक्तिशाली बनाने का महास्वप्न हमारी लोक सभा के बेहतर कार्य-संपादन से जुड़ा हुआ है।

आज जब लोक सभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो रही है, मैं राज्य सभा के माननीय सभापति श्री मोहम्मद हामिद अंसाारी जी की संसद के दोनों सदनों के कार्य में समन्वय के लिए शुक्रगुजार हूँ।

माननीय प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह जी, सभा के माननीय नेता श्री सुशील कुमार शिन्दे जी एवं पूर्व माननीय नेता श्री प्रणब मुखर्जी जी, जो अब हमारे आदरणीय राष्ट्रपति हैं, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज जी एवं पूर्व माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी जी और माननीय संसदीय कार्यमंत्री श्री कमलनाथ जी एवं पूर्व माननीय मंत्री श्री पवन कुमार बंसल जी को सभा के संचालन में सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती हूँ। इस सभा के पीठासीन अधिकारी का विशिष्ट दायित्व साझा करने के लिए माननीय उपाध्यक्ष श्री कड़िया मुंडा जी और सभापति तालिका के सदस्यों की अनुग्रहित हूँ।

मैं संपूज्य की माननीय नेता श्रीमती सोनिया गांधी जी के प्रति भी आभारी हूँ। मेरा कर्तव्य तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक मैं सभी दलों और समूहों के नेताओं और प्रत्येक सदस्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन न कर दूँ।

मैं इस सम्माननीय सभा के संचालन में निरंतर सहयोग देने हेतु लोक सभा के महासचिव श्री एस. बाल श्रेखर व पूर्व महासचिवों सर्वश्री पी.डी.टी. आचारी एवं टी.के. विश्वनाथन तथा लोक सभा से संबंधित सभी कार्यों का प्रतिबद्धता, कुशलता और दक्षता से संचालन करने के लिए उनकी टीम के सभी अधिकारियों, विशेष रूप से टेबल ऑफिस और लोक सभा के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों, मेरे दोनों ओर खड़े रहने वाले मार्शल, चैम्बर अटेंडेंट, नवनिर्भूत महिला चैम्बर अटेंडेंट की भूमि भूमि प्रशंसा करती हूँ। मैं संसद भवन परिसर की सजगता से रक्षा करने वाले संसदीय सुरक्षा सेवा, सीआरपीएफ, सीआईएसएफ, दिल्ली पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों की उनकी अथक सेवाओं के लिए जितनी तारीफ करूँ कम है। सीपीडब्ल्यूडी, रेलवे खान-पान सेवा, बागवानी विभाग और अन्य सहायक एजेंसियों की भी उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए हृदय से सराहना करती हूँ।

हमारी लोक सभा को देश की जनता से जोड़ने और उन तक सार्थक संदेश पहुंचाने में मीडिया की अत्यंत अहम भूमिका रही है। उन्होंने पूरी लगन और जिम्मेदारी के साथ अपने कार्य को निष्पादित किया। इसके लिए मैं सभी मीडिया कर्मियों व लोक सभा टीवी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करती हूँ।

पीठासीन अधिकारी के रूप में मैंने संसदीय संस्थान की सर्वोच्च परम्पराओं को बरकरार रखने का ईमानदारी प्रयास किया है और अपनी पूरी क्षमता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। मेरी कामना है कि हमारे संसद की कीर्ति और उपलब्धियां हिमालय के तुंग शिखरों से भी ऊंची हों। इस पवित्र संस्था की संवेदना और भावना हिन्द महासागर से भी गहरी हो।

पिछले पांच वर्षों में मेरा प्रत्येक सदस्य आपसी सौहार्द का एक स्नेहसिक्त रिश्ता बना है। आज विदा की बेला में, मैं आपके स्वस्थ और सुदीर्घ जीवन की कामना करती हूँ। कामना करती हूँ कि आपका भविष्य उज्ज्वल हो और सफलता आपके कदम चूमे।

मेरी प्रशंसा में आपने जो कहा है मैं उसके योग्य नहीं, परंतु आपकी उदारता के लिए हृदय से आप सबकी आभारी हूँ।

इस सदन में बहुत दिनों से यह तहजीब रही है, रिवाज है और परम्परा है कि यहां कोई न कोई शेर या कविता जरूर सुनाई जाती है। आज शारिक साहब ने शेर सुनाया। मैं उम्मीद कर रही थी कि प्रधान

मंत्री जी भी सुनाएं और उसमें सुषमा जी भी कर्ज छोड़ती नहीं हैं इसलिए सुनाएंगी। मगर मैं समझती हूँ कि अंत में मैं ही सुना दूँ। मैं तो सामाजिक मुक्ति की सेनानियों की परम्परा से आती हूँ। इसीलिए उससे सम्बन्धित मेरी अपनी एक कविता की दो पंक्तियां हैं -

होने दो घनघोर गर्जना, तूफानों को आने दो।

जन्म की नहीं, कर्म की करो अर्चना, बाकी सब जाने दो।

अंत में मैं हिन्दुस्तान की लोकशाही की जय हो।

17.25 hrs.

NATIONAL SONG

The National Song was played.

MADAM SPEAKER: The House stands adjourned *sine die*.

17.26 hrs

The Lok Sabha then adjourned sine die.

* The sign + marked above the name of a Member indicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* English translation of the speech originally delivered in Odia.

* Not recorded.

* English translation of the Speech originally delivered in Bengali.

* Not recorded.

* * This part of the Speech was laid on the Table.

* Not recorded.

* The Member Spoke in Dogri and he did not furnish English/Hindi translation thereof.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* English translation of the Speech originally delivered in Tamil.